गीत-संहिता

विकास

वन्दना के बदले में निरी वंचना मुझको तुमसे मिली।
कली जो बनती कभी प्रसून रह गई अवगुंठित अध खिली।
बने हो मानव क्यों कर आज खड़ी मानवता कितनी दूर।
कि जितनी दूर क्षितिज का दृश्य, दृश्य से भी उतनी ही दूर।

—बालकृष्ण शर्मा "विकास"

गीत—सरिता

(काव्य संकलन)

सरितायें लाखों भू पर बहती रहती हैं।
कितनी वे चुपचाप व्यथा सहती रहती हैं।
जिस सरिता में गीत अनबुझे तैर रहें हों,
उस पर गुरु की कृपा सदा महती रहती है।

रचयिता—

बालकृष्ण शर्मा "विकास"

प्रकाशक—

अशोककुमार शर्मा "विशारद"

विकास साहित्य सदन

१३, पाठकपुरा, उरई (उ० प्र०) २८५००१

[...र
...नवरी १९८६]

मुद्रक—
हीरो प्रिण्टर्स, उरई

[मूल्य
१०-००मा...

"सर्वे भवन्तु सुखिनः"

हमने जब कुछ प्रश्न किये उनसे नन्दन में।
भारत-भाग्य-भविष्य पूंछ डाला वन्दन में।
'प्रश्न तुम्हारे बड़े अटपटे हैं 'विकास जी'।
उत्तर देंगे इन प्रश्नों का प्रिय सुभाष जी।" (१)

"सुनो, होयगा मिलन किसी दिन वनमाली से।
भर जायेगा विश्व नेह की हरियाली से।
कलरव होगा पक्षि-वृन्द का हर डाली पर।
प्रकृति-वधू की आँख खुलेगी हर ताली पर। (२)

स्वर्णिम होगा वेष सभी का अवनीतल में।
अमिय मिलेगा प्राणि-मात्र को सुरसरि जल में।
अब तक थे जो बन्द खुलेंगे पट अन्तस के।
जग जन घट पर सभी भरेंगे भाव सु-रस के। (३)

फूलेंगे सब वृक्ष फलों से फर जायेंगे।
सुनासीर सब रिक्त जलाशय भर जायेंगे।
पशु विचरेंगे निर्भय होकर सहज भाव से।
देश देश में प्रेम बढ़ेगा भक्ति भाव से। (४)

हिन्दू-मुस्लिम, सिख, ईसाई अपने घर में।
घी के दीप जलायेंगे निज गृह-परिसर में।
कुत्सित जितने भाव निकल जायेंगे मन से।
सकल विश्व में मान बढ़ेगा भारत-धन से। (५)

गांधी-युग की धार बहेगी सदा यहां पर।
युवक यहां के बन जायेंगे वीर जवाहर।
राधाकृष्णन का दर्शन फैलेगा ऐसा।
शास्त्री जी की कीर्ति-कौमुदी का रंग जैसा। (६)

भारत होगा धन्य धन्य यह देश हमारा।
सकल विश्व से लगता है जो सबसे न्यारा।
पवन चलेगी सदा यहां निर्मल, गुणकारी।
जन-गण-मन का गूंज उठेगा स्वर जयकारी। (७)

अपना उच्चादर्श, विश्व सब हर्षित होगा।
भारत को निज मित्र बना कर गर्वित होगा।
दिये सभी प्रश्नों के उत्तर प्रिय "विकास जी"
आशिष देकर अदृश हो गये श्री सुभाष जी। (८)

(शक्ति प्रिण्टर्स, उरई)

गीत—सरिता

तुम्हारे परिचय के उपरान्त,
आज तकनिपट अपरिचित रहा।
एक ही सरित एक ही नाव,
किन्तु मैं अपनी गति से बहा।
गया मैं भावों की ओर, भाव भी तुमसे कितनी दूर।
जितनी दूर क्षितिज का दृश्य, दृश्य से भी उतनी ही दूर।

(गीत–२)

× × ×

कभी हास्य की कभी रुदन की,
स्मृतियों के गीत बन गये।
और भाव जो बह कर निकले,
वह जीवन—संगीत बन गये।
माटी के मूरति के आगे क्यों यह शीस झुका जाता है।
ऐसा क्या तुमसे नाता है॥

(गीत–१५)

...स जी की प्रकाशित तथा अप्रकाशित पुस्तकें—

...शित— १- गीत सरिता २-पर्व गीत ३-गुलदस्तये गजल
...शित— १– किन्नरी २— बदलते सिक्के [उपन्यास]
३– गीत-प्रतिमा ४— नग्मये-दर्द (गजलांजलि)
५– दोहावली (काव्य संकलन)
६- कहानी-संग्रह
७– मेरा एक अधूरा पत्र—